Sarth E- Journal

Saarth E-Journal

Saarth E-Journal of Research

E-mail : sarthejournal@gmail.com
www.sarthejournal.com

ISSN NO : 2395-339X
Peer Reviewed
Vol.6 No.14

Impact Factor
Quarterly
Jan-Feb-March 2021

मोहनदास नैमिशराय के कथा साहित्य में धार्मिक समस्याएँ

डॉ. प्रेमचंद एम.कोराली

धार्मिक समस्याएँ

वर्तमान समय में समाज में अनेक प्रकार की धार्मिक समस्याएँ समाज में चुनौती बनकर खड़ी हैं। धर्म के नाम पर आज समाज में अनेक प्रकार के झगड़े होते रहते हैं। इसी प्रकार धर्म के नाम पर दलितों पर सवर्णों के द्‌वारा अनेक प्रकार के अत्याचार होते रहते हैं। ऐसी धार्मिक समस्याओं को लेखक नैमिशराय जी ने अपने कथा साहित्य में चित्रित किया हैं।

'मुक्तिपर्व' उपन्यास में लेखक ने धार्मिक समस्या का चित्रण किया है। दलितों की बस्ती में स्कूल नहीं है। रामलाल बस्ती में स्कूल खोलने की घोषणा करते हैं। रामलाल ने स्कूल का पूरा बजट भी पास करवा दिया है लेकिन उसी 'गाँव' में सवर्ण वर्ग के अध्यापक दलितों को पढ़ाने में झिझक रहे हैं या दलित वर्ग के बच्चों को पढ़ाना नहीं चाहते हैं और तैयार भी नहीं हैं। जैसे कि -"बस्ती में स्कूल खुलने के बारे में भी ऐसा ही हुआ है। रामलाल, जो आर्य समाजी थे, उन्होंने बताया, स्कूल का पूरा बजट पास हो गया है, सभी कुछ तैयार है, बस देरी इस बात की है कि कोई भी अध्यापक बस्ती में पढाने को तैयार नहीं होता। वे सभी अध्यापक सवर्ण थे। जो सरस्वती वंदना करते थे। माथे पर तिलक लगाते थे, जनेऊ पहनते थे, चोटी रखते ते, गाय को माता कहते थे, सर्प को दूध पिलाते थे, कुत्तों को अपनी गोद में बिठाते थे, पर दलितों की परछाई से भी दूर रहते थे। उन्हें जानवरों, कीड़ो, मकोड़ों से प्रेंम था, पर दलितों से वे घृणा करते थे। आखिर उनकी मानवता का दर्शन क्या था, कुछ समझ में नहीं आता था। वे ढोंगी थे, पाखण्ड की केंचुली पहन समाज में अपना धार्मिक

कारोबार चलाते थे।"[1] इसी प्रकार लेखक ने इसकें माध्यम से धार्मिक समस्या का चित्रण समाज के सामने प्रस्तुत किया है।

समाज में मंदिर और मस्जिद दोनों है। एक में लोग खुदा की बंदगी करते हैं और दूसरे में भगवान की पूजा अर्चना करते हैं। दलितों के मंदिर प्रवेश करने की मनाई लगाई जाती हैं। सुमीत कभी कभार दूर-दूर से मूर्तियों को निहारता रहता है। उसका मन उससे बार बार प्रश्न करता था कि - क्या हमारे हिस्से में देवी देवता नहीं थे, हमारे कौन से देवी देवता हैं। हम किनकी पूजा करें, न मंदिर में उनके लिए प्रवेश है और न मस्जिदों में प्रवेश क्या वे इंसान नहीं है। इसी प्रकार इस उपन्यास के माध्यम से लेखक ने सुमीत के द्वारा धार्मिक समस्या को उजागर किया है। सुमीत 9वीं कक्षा में प्रवेस लेता कक्षा के अध्यापक शिवानंद शर्मा मास्टर कम पुजारी अधिक थे। एक दिन सुमीत और उसका दोस्त हबीबुल्लाह उनके मंदिर में चले जाते हैं। जब इस बात का शिवानंद शर्मा को पता चलता है तो वह उन दोनों को बहुत डाँटता है। तब सुमीत के मन में सवाल उभरता है। जैसे कि -"अगले दिन पिता ने अपने बेटे को एकलव्य की कहानी की छोटी पुस्तक दी थी। सुनीत उसे पूरी कहानी को पढ़कर सदमें में पड़ गया। उसे विश्वास न था कि गुरु का आचरण ऐसा भी हो सकता है। बार-बार वह इसी बारे में सोचता और बुदबुदाता हुआ अपने आप से सवाल भी करता था। द्रोणाचार्य ने एकलव्य से अँगूठा क्या इसीलिए मांगा कि धनुर्विद्या में वह और भी प्रवीण न हो जाए। क्या द्रोणाचार्य गुरु होकर भी नहीं चाहते थे कि एकलव्य जैसा शिष्य उतनी प्रगति न करें कि उसकें अपने शिष्य पीछे रह जाएँ। रात में अपने काम से लौटकर जैसे ही बंसी घर आया, उसने सुनीत से पूछ लिया - एकलव्य की कहानी पढ़ ली बेटे। उस समय वह माँ के सामने बैठा था। वहीं बैठे-बैठे उसने जवाब दिया

हाँ पिताजी।

बंशी ने सुनकर गहरीं साँस ली उसने महसूस किया कि बेटे के भीतर विद्रोह का बीज पड़ चुका है। जो बड़ा होकर पेड़ अवश्य बनेगा। शिक्षा का खाली अर्थ किताबी ज्ञान तो नहीं। अपने इतिहास कि बारे में समझना भी शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए।

माँ ने बाप-बेटे की बात सुनी तो वह पूछ बैठी-

य्यै इकलब कौन था बेट्टे।

बाप बेटे ने एक दूसरे की आँखों में देखा। जैसे वे कहना चाह रहे हों कि सुंदरी को एकलव्य के बारे में बताएँ या नहीं। अंत में उन्होंने बतला ही दिया।

सातवीं कक्षा के अध्यापक एम.सी.शर्मा थे। उनका स्वभाव पांडे की तरह न था। वर्णव्यवस्था

के आधार पर ऊँच-नीच को वे पाण्डे मास्टर जो के चश्मे से नहीं देखते थे। उनकी सोच और नजरिया अलग तरह का था। वे अक्खड़ स्वभाव के न थे। न ही विद्यार्थियों को भी बुरा भला बोलते थे। पर वे भी बामन थे। वैसे स्कूल में सभी अध्यापक एक ही जाति के थे। उसी जाति के अन्य लोगों का वहाँ वर्चस्व भी था। स्कूल में उनके लोगों की ही चलती थी। कुछ को तो इस बात का दंभ था कि वे ब्राह्मण थे। बीच बीच में इसी विषय पर उनके

बीच बहस भी होती थी। जाति गर्वकी बातें विद्यार्थियों के कानों में भी पड़ती थी। तब वे भी अपना रंग बदलते।"[2] इसी प्रकार लेखक ने धार्मिक समस्या को चित्रण किया है।

'आज बाजार बंद है' उपन्यास में लेखक नैमिशराय जी ने समाज में व्याप्त देवदासी प्रथा के कारण दलित जाति की स्त्रियों को शोषण चित्रण किया है। देवदासियों के साथ समाज के ठाकुर, साहूकार, धार्मिक ठेकेदार आदि बलात्कार शोषण करते थे। धार्मिक रूढ़ि 'परंपरा' और अंधविश्वास के कारण सदियों से देवदासी की यातना का चित्रण किया गया है। जैसे कि -"पर में कर ही क्या सकती हूँ।

फिर से उसकें भीतर से आवाज उभरी थी,

तू बहुत कुछ कर सकती है। बरसों से तू इस कोठे पर है। तूने यहाँ की अच्छी बुरी हालत देखी है। मासूम लड़कियों को सिसकते देखा है।

पार्वती तेरे भीतर भी वैसा ही उभर रहा था। तभी पार्वती पास आई थी। दोनों ने एक दूसरे की ओर देखा था। जैसे वह कहना चाह रही हो। शबनम बाई पार्वती को मौन सहमति से जैसे बल मिला था। पार्वती तो कल से ही बेचैन थी। उसे तो चकले में बाद में बैठाया गया। पहले मंदिर में बैठी। वहाँ भी काम वहीं था, पर समझ देर से आयी तब तक उसे वेश्या बना दिया गया था। देवदासी या भोग में दासी फर्क कुछ न था। दोनों की नियति एक जैसी थी। भीतर विद्रोह होते हुए विद्रोह नहीं कर सकी। क्या करती वह। देवताओं के रंगमहल में वह भ्रमित हो गई। शबनम बाई संकेत से उसे अपने पास बुलाया था। पर नई लड़की टस से मस नहीं हुआ थी। वह किसी यंत्र की तरह अपनी जगह पर स्थिर थी। देखा भी नहीं था उसने शबनम बाई की तरफ। अजीब हिकारत भरी थी उसकी आँखों में। कल से वह वेश्याओं के बीच थी। किसी चाबी से चलित चरित्र गुड़िया जैसी स्वंय शबनम बाई ने उसकें नजदीक जाकर पूछा था।"[3]

उसी प्रकार वहाँ धार्मिक समस्या का चित्रण बखूबी किया गया है। जिस मंदिर में दलित जाति के लोगों का प्रवेश निषेध माना जाता है। इसी मंदिर में दलित जाति की लड़की को देवदासी बनाकर उसका शारीरिक शोषण किया जाता है। शारीरिक शोषण करने में धर्म बीच में नहीं आता है। 'गाँव' के पुजारी भी 'गाँव' की औरतें शगुन अपशकुन पूछने आती थी तो उनके उरोजों को सहलाने लगते थे। ब्राहमण 'गाँव' की बस्ती की सभी औरतों के साथ संभोग करने का प्रथम अधिकारी बन जाते हैं। लेखक नैमिशराय ने अपने उपन्यास 'आज बाजार बंद है' में धार्मिक रूढ़ियों के कारण दलित जाति की लड़कियों को देवदासी बनाकर बलात्कार किया जाता है, उसका कलात्मक दृष्टि से चित्रित किया गया है। उपन्यास में नायिका पार्वती को पहले देवदासी बनायींजाती हैं और बाद उसे में वेश्या प्रवृत्ति को स्वीकारना पड़ता है। लेखक ने पार्वती को देवदासी से वेश्या बनना धार्मिक रुढ़ि 'परंपरा' तथा अंधविश्वास का परिणाम माना है। जिसको नैमिशराय जी ने धार्मिक समस्या के रूप में समाज के सामने लाने का प्रयास किया है।

निष्कर्षतः नैमिशराय जी ने अपने कथा साहित्य सांप्रदायिक एवं धार्मिक समस्याओं का चित्रण किया है। उन्होंने अपने साहित्य में दलित जीवन की समस्या, पीड़ा, दुख, दरिद्रता, दलित उत्पीड़न, दलितों पर होने वाले शोषण का चित्रण किया है। साथ में

उन्होंने वेश्यावृत्ति का चित्रण, महानगरों में फूटपाथ पर रहते दलितों, दलित समाज के लोगों में होनेवाली मानवीयता के साथ शिक्षा के महत्व को अपने कथा साहित्य का आधार बनाया है।

संदर्भ

1. नैमिशराय, मोहनदास, मुक्ति पर्व, पृ. 39
2. वहीं, पृ. 85 से 86
3. नैमिशराय मोहनदास, ‘आज बाजार बंद है’, पृ. 67

डॉ. प्रेमचंद एम.कोराली
एसोसिएट प्रोफेसर
आणंद आर्ट्स कॉलेज,
आणंद